Course - B.Ed,Part -1

Paper- 7th, Learning Assessment

Prepared by - Dr Meena Kumari

Topic- Techniques and Tools of Evaluation...., continued

------_------+-------------_---+-------++------+-++--+-----------

मूल्यांकन के तकनीके एवं उपकरण

(Techniques and Tools of Evaluation)

(1) प्रस्तावना -- मूल्यांकन , शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है ।अध्यापकों को अक्सर छात्रों द्वारा किए गए क्रिया कलाप तथा शिक्षण प्रक्रियाओं को मापने की जरूरत होती है। इसलिए अधिगम में मूल्यांकन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यांकन यह तय करता है कि शिक्षा के उद्देश्य को किस सीमा तक हासिल किया गया है। मूल्यांकन के द्वारा यह पता लगाया जाता है की पाठ्यचर्या ,शिक्षण विधि, शिक्षण रणनीति, शिक्षक तथा शिक्षण प्रक्रिया कितना प्रभावी है। इन प्रक्रियाओं द्वारा बच्चों से संबंधित उद्देश्यों को कितने दिग्री तक प्राप्त कर लिया गया है और उद्मरी आगे और कितना सुधार किया जाना बाकी है। मूल्यांकन की प्रक्रिया तकनीकी तथा उपकरण के माध्यम से की जाती है

(2) मूल्यांकन की सामान्य तकनीके - मूल्यांकन के लिए उपयोग में लाने जाने वाली तकनीकों में मुख्य तकनीकी निम्न वत है-

१) अवलोकन तकनीक-- मानवीय व्यवहार के मापन की एक प्राचीन विधि है ।मानवीय व्यवहारों के विभिन्न पक्षों को मापने के लिए इस मूल्यांकन तकनीक का उपयोग किया जाता है ।इस प्रकार के तकनीक में वास्तविक जीवन के परिस्थितियों में कुछ खास घटनाओं को एक या एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा वर्गीकरण और आलेख प्रदान करके इस तकनीक को किया जाता है ।इसको वस्तुनिष्ठ तकनीक का एक प्रकार कहा जाता है ।इसकी उपयोगिता अत्यधिक आत्म अनुभवों से लेकर परिष्कृत

प्रयोगशाला तक में किया जाता है। प्रेक्षण क्रिया का अर्थ है किसी विशेष परिस्थिति में घटित होने वाली मानवीय व्यवहार के अवलोकन की प्रक्रिया नियोजित तथा और नियोजित दोनों प्रकार का हो सकता है ।नियोजित अवलोकन में किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए अवलोकन किया जाता है जबकि इसके विपरीत अनियोजित अवलोकन किसी सामान उद्देश्य की दृष्टि से नहीं किया जाता है ।अवलोकन को प्रत्यक्ष अवलोकन तथा अप्रत्यक्ष अवलोकन के रूप में भी देखा जा सकता है ।प्रत्यक्ष अवलोकन का अभिप्राय है कि कि व्यवहार को उसी रूप में देखना जैसा कि वह व्यवहार हो रहा है। परोक्ष अवलोकन में किसी व्यक्ति के व्यवहार के संबंध में अन्य व्यक्तियों से पूछा जाता है।

प्रत्यक्ष अवलोकन दो प्रकार का हो सकता है जिसे सहभागिक अवलोकन तथा असभागिक अवलोकन के रूप में जाना जाता हैं।सहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता उस समूह का अंग होता है जिसमें वह अवलोकन कर रहा होता है जबकि असहभागिक अवलोकन में अवलोकनकर्ता समूह में किसी भी तरह
की भागेदारी नही करता ।

अवलोकन की प्रक्रिया को नियत्रित अवलोकन तथा अनियत्रित अवलोकन में भी बांटा जा सकता है ।नियत्रित अवलोकन में अवलोकनकर्ता कुछ विशेष परिस्थितियों में अवलोकन करता है जबकि अनियत्रित अवलोकन में वास्तविक परिस्थितियों में अवलोकन कार्य किया जाता है ।नियत्रित अवलोकन में व्यवहार प्रभावित हो जाने की संभावना रहती है क्योंकि इस किया जाने वाला व्यक्ति को पता हो जाता है और अनियत्रित किए जाने वाले व्यक्ति को अवलोकन किए जाने की कोई जानकारी नहीं होती है जिससे वह अपने s स्वाभाविक व्यवहार का प्रदर्शन करता ।

इस तरह के अवलोकन के लिए परीक्षण का उपयोग किया जाता है। परीक्षण वे उपकरण है जो किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के किसी समूह के व्यवहार का क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करता है। परीक्षण की प्रकृति के आधार पर परीक्षणों को मौखिक परीक्षण , लिखित परीक्षण तथा प्रयोगात्मक परीक्षण के रूप में बांटा जा सकता है। एक अच्छी और विश्वसनीय अवलोकन के लिए समुचित योजना ,निपुण कार्यान्वयन ,पर्याप्त अभिलेखन तथा व्याख्या की आवश्यकता होती है।

(2) स्वप्रतिवेदन तकनीक - स्वप्रतिवेदन तकनीक में व्यक्ति से ही उसके व्यवहार के संबंध में जानकारी पूछी जाती है ।दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि यह मूल्यांकन का एक व्यक्तिनिष्ठ तकनीक है ।जैसे किसी भी व्यक्ति का ऑटो बायोग्राफी इसका उदाहरण है। व्यक्ति के सूचना के आधार पर पर ही

व्यक्ति के गुणों का विश्लेषण किया जाता है अत: इस तकनीक में इस बात का मापन नहीं होता है कि व्यक्ति में क्या गुण है बल्कि इस बात का मापन होता है कि व्यक्ति किन गुणों को होना बतलाता है। यह तकनीक सामाजिक मान्यता से प्रभावित परिणाम देती है। व्यक्ति सामाजिक रूप से वांछनीय गुणों को बताता है तथा अवांछनीय गुणों को छिपा लेता है। प्रश्नावली, साक्षात्कार ,अभिवृत्ति मापनी इत्यादि इस तकनीक के लिए प्रयोग में आने वाले कुछ उपकरण है।

(3) परीक्षण तकनीक-- परीक्षण तकनीकी में व्यक्ति को किसी ऐसी परिस्थिति में रखा जाता है जो उसके वास्तविक व्यवहार या गुणों को प्रकट कर दें। मापन कर्ता व्यक्ति के सामने कुछ ऐसी परिस्थितियां या समस्याएं रखता है तथा उन पर व्यक्ति द्वारा की गई प्रतिक्रिया के आधार पर उनके गुणों की मात्रा का निर्धारण करते हैं।विभिन्न प्रकार के परीक्षण जैसे बुद्धि परीक्षण निदानात्मक परीक्षण अभिरुचि परीक्षण तथा संप्राप्ति परीक्षण इस तकनीकी के उदाहरण हैं।

(4) समाजमितीय तकनीक - इस तकनीक का प्रयोग सामाजिक संबंधों के समायोजन तथा अंतर क्रिया के मापन पर काम करती है ।इस तकनीक में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से किस प्रकार के संबंध रखता है तथा अन्य व्यक्ति उससे कैसे संबंध निभाते हैं जैसे प्रश्नों पर उनके द्वारा दिए गए उत्तरों का विश्लेषण किया जाता है जैसे किसी भी विशेष समूह में कौन व्यक्ति सबसे अधिक लोकप्रिय है , तरह का प्रश्न समाज नीति तकनीक का उदाहरण है । सामाजिक गतिशीलता को मापने के लिए यह सर्वोत्तम तकनीक है।

(5) प्रक्षेपी तकनीक - व्यवहार तथा मनोवैज्ञानिक गुणों को मापने के लिए यह बहुत लोकप्रिय तथा महत्वपूर्ण तकनीक है। इस तकनीकी में व्यक्ति के सामने किसी असंरचित उद्दीपन को प्रस्तुत किया जाता है तथा व्यक्ति उस पर अपनी प्रतिक्रिया देता है ।इस तकनीक की मान्यता है कि व्यक्ति अपनी पसंद ,नापसंद ,विचार दृष्टिकोण ,आवश्यकता इत्यादि को अपनी प्रतिक्रिया के रूप में दिखलाता है जिसका विश्लेषण करके व्यक्ति के गुणों को जाना जा सकता है।

इस तकनीक में अनेक रूप, चित्र ,स्याही के धब्बे ,अधूरे वाक्य, शब्द साहचर्य ,अपना स्वयं का लेखन आता है ।इनका उद्देश्य उस अनु क्रियाओं को प्रकट करना है जो व्यक्ति के संरचना में जैसे भावनाएं, मूल्य ,अभिलक्षण तथा समायोजन के जो सामान्य परिस्थिति में प्रकट नहीं हो सकता । अत: उन्हें विशेष परिस्थितियों में प्रकट करने के लिए मजबुर करने का तकनीक।सबसे अधिक प्रसिद्ध तकनीक रोसार्क स्याही धब्बा परीक्षण और कथानक संप्रत्यक्षण परीक्षण है। रोसार्क स्याही धब्बा परीक्षण एक

और मानसिक विकार की प्रकृति में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है तो दूसरी और ऐसी गुप्त भावनाओं, संवेग और इच्छाओं के विषय में जानकारी देता है जिनको सामान्य परिस्थिति में दूसरों को पता नहीं लगने देना चाहता है।